मीठे ते मीठी चीज़, उनसे (...)। जैसे पति और स्त्री। जब पति विलायत जाते हैं तो वो रोने लग पड़ती है। दो/तीन रोज़ तो रोती रहती है। समझा ना! जब जाते हैं छुट्टी ले करके, दो/तीन रोज़। ऐसे है ना बच्ची। ये चातक जाने का है। बस, याद किया और रोया। फिर तीन रोज़ (...)। अभी वो तो, पति तो कुछ भी नहीं है। वो तो और ही, आजकल के हिसाब से तो तुम जानती हो– पति तो कुछ काम का ही नहीं है। पति तो विख ही देने वाला है, और क्या देंगे! गहना देंगे, ये देंगे, ये देंगे, घुमाएँगे, फिराएँगे, और तो कुछ नहीं ना बच्ची। अभी ये बाप है जो बहुत सुख का देने वाला है। अगर इनकी मत पर चलते रहें तो बहुत–2 सुख का देने वाला है। वहाँ तो ये ख्याल तो नहीं रहता है ना बच्ची। वो तो एक ऑर्डिनरी (मामूली) बात तक जाते हैं। पर यहाँ जब किसको निश्चय होता है, जिसका प्रेम बहुत लग जाता है– ऐसे बाबा से हम सेकेण्ड भी जुदा न रहें, बस बैठे ही रहें। भले दुनिया मर जावे, बाल–बच्चे सब खतम हो जावें, इसमें हमारा क्या जाता! हम तो बाबा का बन गए ना। हमको तो बाबा का ही बनना है ना। ये सब छोड़ देने का है ना। देह सहित देह के सभी छोड़ करके, मुझे बाबा से, जाना है, बाबा को याद करना है। ऐसे बाबा को हम छोड़ूँ क्यों? परन्तु बाबा अलाउ न करे। समझे ना! नहीं, तुमको तो जाना होगा सर्विस पर। अगर ऐसे सब करते रहें, जो हम बाबा के पास सुनें, सुनते रहें और मौज में रहते रहें, सब भूल जावें, खतम कर देवें, बाबा रहने नहीं देवे; क्योंकि जाना ज़रूर है, सर्विस करनी है और गृहस्थ–व्यवहार में कायदा है कि रह करके और तुमको तमोप्रधान से वहाँ ही सतोप्रधान बनना है। ऑफिस में जाना, ये करना, ये करना, पीछे वो राय देते रहते हैं। समझते हैं कि बच्चों को जब बाप मिलते हैं और गोद में लेता हूँ और ये जानते हैं कि बाबा से हमको और विश्व का मालिक बनना है। तो उस बाबा से हम जुदा, ऐसे बाबा से क्यों जुदा हो जावें! हमको क्या, तो गीत है ना एक– चाहे मारो, चाहे प्यार करो। हम दर से कभी बाहर नहीं जाएँगे। ऐसे है ना। तो गीत तो है ना ऐसे; क्योंकि वो भी ऐसे ही गाया हुआ है कि ऐसी चीज़ से बाहर में कौन जावें, छोड़ें ही क्यों! कुछ भी करे, तो हम जावें क्यों बाहर! गोद लिया, हमको उसके ही पास रहना है ना। तो फिर ये कहते हैं– ये कायदा नहीं है ना कि हमारे पास ही रह जाओ; क्योंकि बात तो करते रहते हैं। आत्माएँ ही जानती हैं कि अरे, हम आधाकल्प बाबा को याद करते थे, अभी मिला है बाबा, आया हुआ है और इनका अभी क्यों छोड़ूँ! गोद लिया है तो घर में रहना पड़ता है या गोद लेकर फिर कोई अपने घर में रहता है? परन्तु कायदा है यहाँ का। तो उस कायदे में ड्रामा के...कायदे अनुसार ऑटोमैटिकली सब कोई अपने घर में जाकर रह जाते हैं। कोई–2 होगा जिनको कोई वक्त में ऐसे उछल आएगी कि हम क्यों घर में जावें? हमारा कोई घर से वास्ता नहीं है। बाप कहेंगे– नहीं, तुमको जाना ही होगा। अरे लॉ है जो ड्रामा का, उनके ऊपर चलना होगा। नहीं तो है चीज़ ऐसी, जो वाह! जिसकी गोद में आया, उनका बना, हम उनको क्यों छोड़ें? जबकि हम आधाकल्प उनको (...)। ये बाबा बोलता है, ये तो यहाँ रहो या घर में जाकर ये भी करो, तुमको कौन मना करते हैं? घर में, यहाँ बैठ करके क्या करेंगे! तुमको सर्विस करनी है, घर की सम्भाल करनी है। वो कौन करेंगे? ये छोड़ करके आना ये तो लॉ के विरुद्ध है। ये तो फिर वो संन्यास हो जावे। इसलिए यहाँ का कायदा ही ऐसे बना हुआ है कि नहीं, इनको घर में रहना है। वो समझती हैं– हमको घर सम्भालना–करना है, तो घर में मोह भी तो रहता है ना बच्ची। भले जानते हुए भी, बाबा कहते हैं ना– कोई को निश्चय हो और उस समय में नहीं भागे, मैं नहीं कहूँगा उनको निश्चय हुआ है। अगर निश्चय हो गया– तो ये बाबा है वही, जिससे हमको वर्सा मिलता है। तो कोई गरीब हो और बाप मिले लखपति। आ जाओ, हम तुमको अपना बच्चा बनाएगा। .

..करके उनकी गोद में बैठ जाएगा। ...वाह! हमको प्रॉपर्टी इतनी मिलती है। वहाँ झुपड़ी में रहने से हम जाकर बंगले में रहें। वो तो खुशी से जाकर रहेंगे। फिर भले माता–पिता हैं, कभी–2 जा करके होके आएँगे, देखेंगे, रिवाज़ को नहीं छोड़ेंगे। ले ही लेते हैं गोद में ना। साहुकार लोग, मारवाड़ी लोग सब ले ही लेते हैं गोद में। ये अभी फिर कोई रहने का ही इस दुनिया में नहीं है। इस जन्म में सो जाना ही है वापस। तो गाया भी हुआ होता है कि भई सबको (...), ये है ही प्रवृत्तिमार्ग। घरबार छुड़ाय तुम रख भी नहीं सकते हैं। कौन सम्भालेगा यहाँ किसको! क्या करेंगे यहाँ बैठ करके? कोई धंधा–धोरी नहीं है ना बच्चे। आदमी क्या करेगा बैठ–2 करके यहाँ! यहाँ तो बाबा को तो नहीं कारखाना निकाल कर बैठना है– अच्छा भई आओ, बैठो, तुम्हारे लिए कोई काम निकाल कर बैठें। ये सारा दिन तो नहीं याद करने का है ना यहाँ बैठ करके। तो ये बना ही ऐसा हुआ है। जो फिर कई होते हैं, जब जाते हैं, तो फिर उनको थोड़ा आते हैं, आँसू आते हैं, रोते हैं एक/दो रोज़ पहले, ऐसे–2 भी होते हैं। कोई सयाणा है, समझू है, बोला–अब जाना ही है, फिर इसमें क्या होगा रोने से! कोई अब यहाँ बैठ थोड़े ही जाएँगे। नहीं, तो सभी नम्बरवार हैं ना। कोई तो यहाँ से गया और वो काम में पड़ा, बात भी नहीं, याद भी नहीं और नहीं तो कोई को बिल्कुल ही, तो वो जगह देखे कि नहीं, बाबा के पास तो हमको एफोर्ड कर सकते हैं। किराया लगता है ..... जाओ एक दफा फिर बाबा से मिल करके तो आवें, बाबा का प्यार तो ले करके आवें। तो आ करके फिर ....., ये फिर भागा। तो ये वैराइटी है, क्वालिटीज़ है इसमें और आगे चलकर ऐसे–2 क्वालिटीज़ आएँगे बिल्कुल तीखे, जैसे कि इन्होंने सिन्ध में किया। देखो, कुछ वो ख्याल किया– हम किसके घर, कहाँ जाते हैं? बस, सब कुछ छोड़ करके, 12 बजे छोड़ करके एकदम भाग करके आ गए। अरे, कितना मत्था मारा– गवर्मेण्ट फलाना–टीरा। एकदम हम नहीं छोड़ेंगे बाप को। कि छोड़ा बाप को तो फिर हमारा हमेशा छूट जाएगा। तो देखो, कैसे सब एकदम आ गए, फिर कोई उसमें सब तो एक जैसे नहीं होते हैं ना। एक दफे तो, वो जो है ना शानपुर वाली। क्या नाम है उसका? (किसी ने कहा– प्रकाश) प्रकाश। अच्छा, ये भी अच्छे घर की थी। तो एक दफा वो बाहर में आ करके, उनसे मुलाकात करके और हमको वो मोटर में डालते थे। तो हमारे ये बच्चे हैं, दो/तीन वो खड़े थे। वो उनको पकड़े, वो उनको पड़े, इनकी आपस में लड़ाई लग गई। .....कोई परवाह नहीं, कोई ऐसे नहीं कि पति नहीं था। तो ये तो विचार भी कहता है जबकि (...) ख्याल किया जाता है। ओहो! बाप भगवान! भगवान के हम बच्चे बने हैं और बाबा से हमको वर्सा लेना है। बाबा कहते हैं सिर्फ मुझे याद करते रहो तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा और औरों को भी समझाएँ। अभी औरों को समझाए, तो बाहर तो जाना पड़े ना। तो सर्विस में लग जाओ। जैसे बहुत बच्चे भी लगे पड़े हुए रहते हैं। धीरे–2 आगे–2 चल करके बहुत लग जाएँगे बच्ची। तुम(को) बहुतों का कल्याण तो करना है ना। प्रदर्शनी... ये थोड़ी है! कि ये प्रदर्शनी तो पता नहीं क्या बनेगी आगे चल करके! इन्वेन्शन निकलती है ना। और भी कुछ इनमें एडिशन ऑल्टरेशन (परिवर्तन) वगैरह हो जावे, जो मनुष्य देखने से ही झट समझ जावे। तो ये भी बच्चों को मालूम है कि बरोबर जिन्होंने कल्प पहले बाप से वर्सा लिया, आएँगे ज़रूर। बच्चा आकर बन(...)। फिर कोई बिल्कुल तीव्र वेग से। अभी तीव्र वेग पुरुषार्थ करने वाले बड़े थोड़े। बाबा ने समझाया ना, राजा और रानी बनना और प्रजा है उनकी लाखों। तो प्रजा जास्ती बनेगी ना। राजा–रानी बहुत थोड़ा बनेगा। बहुत थोड़ा, बिल्कुल वास्ट (विशाल) डिफरेन्स है। समझा ना! वो 100 परसेन्ट, वो 1 परसेन्ट। उनसे भी कम। तो उनसे उसमें मेहनत चाहिए बहुत अच्छी तरह से। प्रजा बननी बड़ा सहज है, बिल्कुल इज़ी है। उसमें भी नम्बरवार। तुम बच्चे भी देखते हो

सेन्टर पर– तो कोई अच्छा आता है, कोई अच्छी तरह से उठाता है, कोई कम उठाता है। कभी कोई गिर पड़ता है, कभी कोई .... करते हैं। कभी तो बिल्कुल नहीं छोड़ेंगे। तो जितना आगे होगा इतना चटकते रहेंगे; क्योंकि इत्तफ़ाक भी होते रहेंगे। समय भी थोड़ा होता रहेगा और आवाज़ भी होता रहेगा कि बरोबर ये वही है महाभारत की लड़ाई। ...ओपीनियन लिखो। कभी भी नहीं लिखा। ये अभी नया निकल आया है; क्योंकि बाप कहते आते थे– क्या करें! केस करें? क्या करें? ये गीता को खण्डन कर दिया। बड़ी भारी भूल की है। अब पुकारें किसके(किसको), गवर्मेण्ट है इररिलीजियस! अभी ये गवर्मेण्ट न है इररीलिजियस, न है रीलिजियस। न है पुरुष, न है स्त्री, बाकी क्या है! ऐसे भी नहीं है कोई इररीलिजियस है। नहीं–नहीं। देखो, अगर इररीलिजियस होती तो क्यों ये गुरु करते? वहाँ क्यों जाते? ये रावण की ये दशहरा–वशहरा क्यों मनाते? ये तो रिलीजियस बातें हैं ना। पढ़ते भी हैं और फिर कहते हैं– हम धर्म को नहीं मानते। फिर तो क्या, न इधर के रहे, न उधर के हो गए। वो एक ऊँटपक्षी होता है ना म्यूज़ियम में, जिसकी शीशी बड़ी होती है। उनके लिए पहाका होता है– अरे, पर भी हैं तुमको। चलो, उड़ो। जी नहीं, मैं ऊँट हूँ। अच्छा, ऊँट हो तो बोझा(...)। न, मैं पक्षी हूँ। एक होता है, उसको अंग्रेजी का क्या नाम है? शीशी बड़ी होती है, टाँगे बहुत पतली होती हैं। (किसी ने कहा– ऑस्ट्रिच, शाहमृग) शाहमृग हाँ, ये नाम है। उनके लिए कहा जाता है– पर भी हैं और चलते भी हैं। तो कभी–2 पर उठ करके ऐसे भी भागेंगे, फिर चलेंगे भी। तो ऐसे पहाका है– अच्छा, पर हैं, अच्छा उड़ो। जी नहीं, मैं ऊँट हूँ। उसको कहा ही जाता है सिंधी में 'शतुर', हम लोग कहते हैं उसको 'ऊँटपक्षी'। यानी है भी शिकल उनकी जैसे ..... ऐसे पतली टाँगे। तो उनका नाम हम लोग ऊँटपक्षी, तो पहाका देते हैं। तो न ऊँट बनते हैं, न पक्षी बनते हैं। दोनों जहान से गया हुआ जैसे। तो बाबा भी इनको भी कहते हैं– न हैं रिलीजियस, न हैं इररिलीजियस। यहाँ तो मंदिर भी बनाते रहते हैं। बुद्ध का मंदिर बनाते। पैसा खर्च करके भी करते रहते हैं। बहुत खर्चा करते हैं। रामलीला मनाते हैं, बहुत खर्चा करते हैं और फिर कहते हैं– हम इररिलीजियस हैं, हम धर्म को नहीं मानते हैं। तो अभी उनका दोष नहीं है। ड्रामा के प्लैन अनुसार ये तो बच्चे ही आ करके इतना सभी नॉलेज लेते हैं। और कितनी, कोई शास्त्र में नहीं लिखा हुआ है क्लीयर, है सही ज़रूर– मन्मनाभव। गारंटी करता हूँ– तुम्हारे सब पाप भस्म हो जाए। लिखा हुआ भी है योग का। पीछे भी– पतित–पावनी गंगा और कैसे वो प्राचीन योग लगाना है? वो देखो, कहते हैं भला– भारत का प्राचीन योग विलायत में जाता है। वो यही समझते हैं कि भारत का ये प्राचीन योग, भारत के जो हैं संन्यासी (...)। तुम भी सन्यासी हो ना बच्चे। तुम हो राजयोग सन्यासी, वो है हठयोग सन्यासी। सन्यासी दोनों; क्योंकि 5 विकारों को दोनों छोड़ते हो, वो घर बैठे, वो अलग निकल जाते हैं। तो वो लोग समझते हैं कि ये जो हैं सन्यासी (...), अभी उनको वो निवृत्तिमार्ग और प्रवृत्तिमार्ग का सन्यास–वन्यास का पता तो है नहीं। इस समय में हैं ही निवृत्तिमार्ग वाले। तो वो समझते हैं– ये भारत के जो हैं ना, इनके पास प्राचीन योग और ये गीता भी तो जानते हैं। गीता भी तो ले जाते हैं और गीता का भी प्रचार बहुत करते हैं और गीता में हैं राजयोग की बातें, प्राचीन भारत का सहज राजयोग और उन बिचारों को पता कुछ भी नहीं है। वो सर्वव्यापी, योग...कैसे सिखलाएगा? किसके साथ सिखलावे? तो ये तो ड्रामा के प्लैन अनुसार ये सब हो पड़ता है। जब ऐसी हालत होती है, समय भी होता है, तभी फिर बाप कहते हैं– मुझे आना ही पड़ता है। तो बच्चों को समझाते हैं ना– मुझे ये साधारण तन में प्रवेश करना पड़ता है। नहीं तो मैं कैसे बैठ करके बच्चों को राजयोग सिखलाऊँ! और फिर समझाते हैं बच्चों को कि बच्ची, ये आत्मा ही शरीर

लेती है, करती है। आत्मा ही वकील बनती है, कभी डेड बनती है, कभी चमार बनती है, कभी सोनार बनती है, कभी–3 ये बनती आती है। भई ऐसे नहीं, कोई मनुष्य जा करके घोड़ा–गधा बनता है। ना। तो किसको ये मालूम तो नहीं ना बच्ची– कैसे 84 का चक्कर और समझते हैं 84 लाखों का चक्कर। अभी बताओ, किसको कुछ भी पता नहीं। कौन सुनावे ये सब बातें? तो बाप आ करके कितनी ही बातें सुनाते हैं जिसको ज्ञान का सागर कहा जाता है। तुमको कितना ये ऊपर से ले करके– शिवबाबा कौन है, उसका रूप क्या है, नाम क्या है, ऑक्युपेशन क्या है, पार्ट क्या है इस ड्रामा के अंदर। नहीं तो ड्रामा का ही कोई किसको पता नहीं कि पार्ट क्या है ड्रामा में, वो कोई भी सन्यासी–वन्यासी जानते ही नहीं हैं। पार्ट की बात सुनाओ तो भी मूँझेंगे। तो तुम बच्चों ने ये सभी कुछ एड करके (...), सो भी देखो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। कितने अच्छे–2 बच्चे, सर्विसएबुल बच्चे भी माया की हार खा करके रफूचक्कर हो जाते हैं। आगे चल करके फिर वो भी आएँगे। ऐसे मत समझो बच्चे कि गए हुए, तो कोई नहीं आएँगे। तुम्हारे दिल्ली में बहुत हैं जो पढ़ाई छोड़कर जाते हैं। आगे चल करके आएँगे, कहाँ जाएँगे! जितना तुम बच्चों का प्रभाव निकल जाएगा (...)। ये प्रदर्शनी से तुम्हारा प्रभाव होता जाता है ना बच्ची। वो जो है भगाने की बात– फलानी को भगाया, ये भगाया, वो भगाया। भगाने की तो कुछ बात नहीं है ना। तो जो भी गाया जाता है शास्त्रों में, वो रॉंग है, जो तुम प्रैक्टिकल में देखते हो, ये है राइट। बाकी वो सभी हैं रॉंग; क्योंकि बाप आ करके राइट कहते हैं–हियर मी। सभी को, जो भी वेद–शास्त्र पढ़ने वाले हैं–हियर मी एण्ड जज यूअर सेल्फ कि तुम्हारा वेद,ग्रंथ,शास्त्र वगैरह जो तुम पढ़ते आते हो, वो भक्तिमार्ग है ना। वो उतरती सीढ़ी है ना। क्या तुमको सुख देंगे वो सब कि जबकि तुमको उतरना ही है! ये तो रस्ते हैं नहीं कोई भगवान से मिलने के लिए। कोई ग्रंथ पढ़कर जाएगा, कोई वेद पढ़कर जाएगा, अरे भगवान को जाकर पहुँचेगा! ये कोई पहाड़ी थोड़े ही है– कोई वहाँ से चढ़ा, कोई वहाँ से चढ़ा, वहाँ से चढ़ा। जाकर पहाड़ी की चोटी पर... ऐसी तो कोई बात है नहीं। तुम तो कहते हो– हे पतित–पावन, आओ। तुम खुद ही कहते थे, शास्त्र पढ़ते हो, वेद पढ़ते हो, सब करते हो, गंगा में स्नान, खुद ही कहते रहते हो रोज़ और इतनी मूर्खता, जो...समझ में नहीं आवे कि हम कहते ही हैं कि हम पतित, हमको आ करके पावन बनाओ। तो पतित अपन को फिर समझते हो। किसको कहो, पतित सन्यासी को– अरे, तुम अभी ताली बजाते हो ना–पतित–पावन सीता–राम। यानी आओ, हमको पावन बनाने वाला। पुकारते हो उनको। तो पतित ठहरे ना। तो बिगड़ पड़ते हैं। अभी तो तुम उनको कहते हो–...पतित हो तब तो जाते हो ना गंगा में स्नान करने, पावन बनने के लिए। पीछे पावन कहाँ बनते हो! रोज़ स्नान करते हो, आते हो, फिर स्नान करते, आते हो। भले कुम्भ का मेला छः–2, आठ–2 बरस लगता है या 12 बरस का भी कहते हैं। सो क्या? ऐसे तो रावण को भी बरस–2 जलाते हो, वो तो कोई खतम ही नहीं होता है। कितना भी ....। तो अभी बच्चे जानते हैं कि बरोबर जब ये विनाश का समय होगा तब तलक इनका ये रावण चलता आएगा। पीछे तो रावण–वावण भी जलाने वाले नहीं कोई तो। ये तो कोई को, अभी तो शास्त्री मरता है तो उनकी मट्टी ले करके एरोप्लेन में, यहाँ–वहाँ बहुत भटकाते रहते हैं। ये तो पीछे तो मरेंगे ऐसे ... जो किसकी पीनी नहीं पहनेगा, किसकी काठी पर उठाएगा। वो तो ..... में ऐसे कुछ बात है कि ऐसे न हो कि बच्चों को भी तकलीफ दे। ...जो झट बम छोड़ा और ये मरा। हवा आई अन्दर में, ये खतम हुआ। ऐसे–2 जर्म्स डालते रहते हैं, क्या करते हैं। अभी क्या करेंगे, ये भी तुम बच्चों को समझना चाहिए ना। ये इन्वेन्शन चलती रहती है, एक/दो को कैसे खतम करें। उनके बुद्धि में है कि ऐसा कोई करे जो अगर छोड़ें भी,

तो सब खतम हो जावे।...दुःखी न हो पिछाड़ी में, हॉस्पिटल में नहीं जाना पड़े। हॉस्पिटलें कहाँ से आएँगी! ...जब भी आपघात भी करते हैं, डूबते बहुत हैं; क्योंकि अंदर गया और खेल खलास है। जल्दी किसको मरना होना है तो रेल के आगे भी जा करके, वो रेल आती है ना, फट सो गया, एक सेकेण्ड में खलास। वो तो बीमार–2 होकर–3 चिल्लाकर–2 मरते हैं। उनसे तो फिर वो मौत अच्छा है। फरक, ये गया। तो ये भी ऐसे ही है फटक। फटक और ये गया; क्योंकि जाना है ना सबको। जो साजन आया है, तो ये सभी सजनियाँ को वापस ले जाएगा, तो ले जाएगा, क्या बैठ जाएगा एकदम! मौत ही ऐसे किसम का है। ...बुद्धि भी कहती है विनाश होगा। सबको वापस जाना है ना। बाकी चलो थोड़े रहेंगे। जैसे हम कहते हैं कि अच्छा, हम सतयुग में भी थोड़े होंगे। यहाँ भी थोड़ा मिक्स हो करके रहेंगे, जो थोड़े होंगे। बाकी तो विलायत–2 वाले तो सभी खतम हो जाएँगे। सो भी थोड़े यहाँ रहते हैं। वहाँ तो एकदम खतम हो जाते हैं; क्योंकि अविनाशी भारत है ना बच्चे। भारत का कभी विनाश नहीं होता है और शास्त्रों में लिख दिया– प्रलय होती है माना सब खतम हो जाते हैं। तो प्रलय होती है, ये तो होता ही नहीं है कभी भी। तो शास्त्रों में बहुत ही गपोड़े। इसलिए बाप ही खुद आकर कहते हैं– इनसे कोई तुमको...। ये सब भक्तिमार्ग में जो तुमने देखा वो फिर से भक्ति चलेगी। तुम फिर यही चीज़ देखेंगे। फिर वण्डर तो लगता है ना, बनेगा कैसे! क्या वही आ करके फिर बनाएगा, लिखेगा, ये करेगा? नहीं। होगा तो ज़रूर ना बच्चे। सोना इतना कहाँ से आएगा भारत में? सोना ये देखो कहाँ है! सोना भी तो चाहिए ना मकान बनाने के लिए। तो ज़रूर कुछ तो प्रबंध होगा ना। खानें–वानें सब नई होंगी ना। वो जो पुरानी बन गई हैं, खाली हो गई हैं, सो फिर भरतू होंगी। कि तुम मीठे–2 बच्चों को तो ये सभी ज्ञान की बातें चिंतन में ला करके (...), जैसे बच्चे पढ़ाई पढ़ते हैं। तो पढ़ाई पढ़ते हैं तो उनको खुशी होती है ना। वो पढ़ाई का मंथन होता रहता है ना– हिस्ट्री, जॉग्राफी, मैथेमैटिक्स। हम पास होंगे, नहीं पास होंगे, वो खयालात करते रहते हैं, प्रैक्टिस करते रहते हैं। भई, इम्तहान लेंगे। ये भी ऐसे ही है। इसमें सम्पूर्ण यहाँ बनना ही है। कोई क्रोध न आ जावे, कोई कुछ खा न लेवे, हमको देवता बनना है, आदतें न कुछ पड़ जावें और बल्कि खान–पान को तो छोड़ो, पर देह का भी भान न आवे; क्योंकि पराये चोले को खलास करना है, छोड़ने का है। तो ये सभी रसम–रिवाज़ यहाँ भारत में हैं। जब शादी करती है बच्ची या बच्चा, तो उनका कपड़ा–वपड़ा सब पुराना लेते हैं, फटे हुए; क्योंकि वहाँ जा करके खूब सजेंगी। तो देखो बच्ची, ये भारत में क्या रखा है, सब कचड़ा–पट्टी है। सजने का है इनको। तो सजने का, अभी भारत को सजना नहीं है, तुम बच्चों को सजना है। तुम इन सबमें, तुम बच्चे कोई भी हालत में डरने वाले नहीं। किसके मरेंगे, कोई भी करेंगे। बोलो– ये तो हम जानते हैं ना– ये सब मरने का है, विचार काहे का! साक्षी हो करके देखते रहेंगे, कभी डरेंगे नहीं, कुछ भी नहीं होगा। ऐसे में बाबा तो बैठा है, समझाते रहते हैं रोज़। पूछते हैं– भई, कभी कोई ऐसी तो नहीं है जो रो लेगी कोई बात में? नहीं तो बाबा समझेंगे कि वाह! इतने बाप के बच्चे और इनको रोने की दरकार है क्या, जबकि कभी भी रोने का नहीं है वहाँ। रोने से प्रूफ बनना है एकदम यहाँ इस जन्म में। तो फिर वहाँ सदैव हर्षित रहेंगे। अरे बच्चे जब बाहर निकलते हैं तभी भी रड़ियाँ नहीं मारते हैं, उआ–2 भी नहीं करते हैं। कि बच्चों ने साक्षात्कार किया– कृष्ण का जन्म कैसे होता है। तो बस, वो तो ऐसे ही बैठे–2 ..... मालूम है जैसे कि बिजली आ गई है, ऐसे बच्चे पैदा होते हैं। कोई तकलीफ नहीं, कुछ बात नहीं। महल और दासियाँ और क्या–2 बात है! तो तुम लोगों को कुछ बाबा कहते हैं ना– मैं चित्र को देखता हूँ और बस चित्र देखता हूँ, अरे, मैं बस ये शरीर छोड़ूँगा, ये बनूँगा। तो तुम बच्चों को

भी, तुम्हारे लिए भी ये होते हैं ना– हम भी तो यही बनते हैं ना। हम पुरुषार्थ करते हैं, हम भी तो राजा–रानी बनेंगे। वाह! मम्मा–बाबा यहाँ कहते हैं, तो क्या मम्मा–बाबा के(को) फॉलो नहीं करेंगे...। मम्मा–बाबा क्यों कहते हैं? ये लॉ कहता है कि जब मम्मा–बाबा कहते हैं, वो तख्तनशीन ज़रूर होते हैं। दिन–प्रतिदिन प्वॉइंट्स ऐसी सहज होती जाएँगी, तो झट तीर लगेगा। तुम्हारे जो तीर हैं ना बच्ची, बड़े तीखे होते जाते हैं। जैसे तलवार को तीखा...जाता है ना, जौहर भरा जाता है ना बच्चे। तलवारें होती हैं ना, वही तलवार 10 रुपया, वही तलवार 1000 रुपया। उसमें क्या है कि जौहर है। ये बाबा धंधा किया है ना इनका भी। तो उनमें वो निशानी रहती है बहुत, जिससे हम मालूम करते हैं कि इसमें जौहर, ये बड़ी तीखी है। तैसे तुम्हारे में अभी जौहर भरा जा रहा है। तुम्हारे बाण तीखे बनते जाते हैं, दिन–प्रतिदिन तीखे बनते जाते हैं। वो पिछाड़ी में आ करके तुम भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य वगैरह को (...), तब वो कहते हैं– ये ज्ञान बाण तो भगवान इनमें भरते हैं। भगवान भरते हैं इनके तरकस में। अभी बाण–वाण तो नहीं हैं ना बच्चे। नहीं, ये बुद्धि में, बुद्धि रूपी तरकस में बाप ये ज्ञान के बाण भरते हैं ऐसे। सो आगे चल करके, कोई देरी नहीं है बच्ची। वो भी खुश आ करके होएगा। जब सुनेगा ना, समझेगा और खुश हो जाएगा। चरणों में तो गिरना है ना। कि तुम्हारी इन्सल्ट की है ना...। माताओं द्वारा ही इन्हों को बाण मरवाए हैं; क्योंकि तुम्हारी इन्सल्ट की है। लेन–देन तो है ना बच्ची। जैसे बाप कहते हैं क्रिश्चियन लोग ने बहुत पैसा उड़ाया यहाँ से। अभी फिर उनसे वापस मिल रहा है बहुत। ...80/90 के लिए भी लोन में रहते हैं। समझा ना! यहाँ आ करके बाबा से राय लेवे। तो उनको बोले– हर्जा नहीं है। 6 परसेन्ट भी ठीक है, 7 परसेन्ट भी ठीक है। 50 बरस के लिए ले लेवें जितना चाहिए इतना। मिलना कुछ भी नहीं है उन लोगों को। वापस थोड़े ही कुछ देने का है। जितना तुमको चाहिए। अभी किसको कहें? कोई एक/दो को ... करेंगे। इंदिरा गाँधी को कहेंगे, किसको सुनाएँगे, बोलेंगी– ये चरी हुई है, इसका माथा खराब हुआ है। प्रेजीडेण्ट को बताओ और कुछ ऐसी बात कर देवे तो वो...; क्योंकि है प्रजा का राज्य, ये चल नहीं सकते हैं। कोई भी राय पर नहीं चल सकते हैं एकदम। इतना अन्न भी मँगाते हैं तो भी रड़ियाँ मारते हैं– अन्न इतना क्यों मँगाते हो? अपना बनाओ, ये करो। अरे, भूख मरते हैं, मँगाना ही पड़ेगा। ये कोई बात थोड़े ही है। नहीं, कर्जा नहीं जास्ती लेना। ज़रा लेना ही पड़ेगा। तो कोई क्या बकते रहते हैं! आपस में ही बकते रहते हैं बहुत बातों के ऊपर। वो अभी कौरव लिखते हैं, तो भी बिगड़ते हैं कोई–कोई। तो कोई बोलेंगे– ये तो बिल्कुल ही राइट है ना। भगवानुवाच– ये यूरोपवासी यादव, भारतवासी कौरव और पाण्डव भाई–2, क्या करत भये? अभी हैं ना बरोबर, भाई–2 हैं ना हम। हम कोई दूसरे थोड़े ही हैं। भारत के तो रहने वाले तो हैं ना और बाप भी कहते हैं– ये आसुरी सम्प्रदाय, ये है दैवी सम्प्रदाय। ये किसने कहा? भगवानुवाच। ये दैवी सम्प्रदाय या आसुरी सम्प्रदाय क्यों कहते हैं? ये दैवी सम्प्रदाय बन रही है। वो आसुरी सम्प्रदाय नहीं बनती है। तो देखते हैं, आसुरी सम्प्रदाय हम भी थे। अभी आसुरी सम्प्रदाय से बाप दैवी सम्प्रदाय (...)। वो जो आसुरी सम्प्रदाय से फिर करके दैवी सम्प्रदाय ... सो आते ही रहेंगे, आते ही रहेंगे, आते ही रहेंगे, वृद्धि को पाते रहेंगे ढेर के ढेर। अच्छा चलो 84 जन्म पूरा हुआ है। अभी बाकी थोड़ा दिन हैं। अभी हम बाबा से वर्सा पूरा ले लेंगे। ...बैठ करके बाबा से रूह–रिहान करें। समझा ना! वो स्तुति की जाती है ना, जैसे इनकी भी स्तुति... देखने में थोड़े ही आते हैं। कृष्ण की महिमा करते हैं। कहाँ है कृष्ण? कृष्ण ऐसे करता था, करता था, करता था, ऐसे ही करते रहते हैं ना। तो यहाँ तो वो सम्मुख बैठा हुआ है ना, सब बताते रहते हैं। तो अभी मुझे याद करो। आत्मा को ... समझ करके मुझे याद करो।

बाबा कहते हैं– तुम बच्चों को तो हमने (...), तुम नंगे आए थे ना यहाँ पहले–पहले! याद है अभी, तुम भूल तो नहीं गई? तो इसको कहा जाता है– हाँ बाबा, हम लोगों को स्मृति आई अभी। हमको स्मृति आई कि 84 जन्म लिया (है)। अभी हम निश्चय करते हैं कि बरोबर कल्प पहले भी ऐसे ही आपने समझाया था– तमोप्रधान से सतोप्रधान ऐसे, मन्मनाभव यानी मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म...। अभी ऐसे तो कोई भी मनुष्य कह भी नहीं सके कुछ और लड़ाई भी सामने खड़ी है। और है, बच्चे भी आ करके बनते ही जाते हैं दिन–प्रतिदिन। नए–2 आते रहते हैं ना बच्ची। तो ये आते रहेंगे जास्ती–2, फिर जब बहुत होगा तो जास्ती आएँगे, जास्ती आएँगे। जो–2 अपने सैपलिंग होगी, ब्राह्मण बने होंगे, वो कोई–न–कोई से, कोई आर्यसमाजी, कोई फलाना, यहाँ–वहाँ से निकलते आएँगे। अच्छा, बच्ची। (म्युज़िक बजा) वो तो फ्री है। वो भले अपनी ये रूहानी नॉलेज भी आकर लेवे और सर्विस में लग जावे; क्योंकि इनको भारत का अभी रूहानी सर्विस का, सोशल वर्कर्स भी तो हैं ना बच्ची। कुमारियाँ भी हैं बहुत सोशल वर्कर्स; क्योंकि वो है जिस्मानी, ये है रूहानी। वो है पाई–पैसे की, ये है हीरों की। तो शौक जागेगा ना। जिन्होंने किया है वो आपे ही आ जाएँगी, वो पीछे रहेंगी नहीं। बाबा कहेंगे– नहीं बच्ची, थोड़ा ...। नहीं बाबा, मैं नहीं जानती हूँ। आप कहते हो तो भी नहीं मानूँगी। मैं अपनी सर्विस करूँगी। बाबा कहेगा तो भी नहीं मानेगी। वो निश्चय होता है ना उनको– क्यों वेस्ट टाइम करें। अपना भी कल्याण करें, औरों का भी कल्याण करें। वो सारे सभी ह्युमेन मिशन हैं। ये है इनकॉरपोरियल रूहानी मिशन। ...रूह समझते हो ना, तो ये रूहानी मिशन। ये बड़ी वण्डरफुल मिशन है, जिसका कोई भी वर्णन या सिवाय अनुभव के कोई समझ नहीं सके; क्योंकि रूहानी मिशन भी होती है। वो तो सभी जिस्मानी मिशन्स हैं, जो भी हैं। जिन्होंने भी ये धर्म स्थापन किया है। मनुष्य हैं ये रूह, आत्माएँ। ईश्वरीय, तो आत्मा हुआ ना, इनकॉरपोरियल मिशन।

मीठे रूहानी बच्चों प्रति, बच्चे तो बहुत ही हुआ ना, रूहानी बच्चों प्रति। अभी जब तुम्हारे से बात करते हैं, तो देखो इनको भी तो, बाबा को याद आता है ना– मैं सबको याद देता हूँ। मुरली में भी जाती है। सभी रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप–दादा का। ये तो जान गए हैं ना– रूहानी बाप एक ही है। ये फिर जिस्मानी ग्रेट ग्रैण्ड फादर है– ब्रह्मा, एडम ये सब देखो। ..... पीछे भक्तिमार्ग में ये सभी देखो– एडम–फेडम ये नाम देते हैं। रूहानी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा, फिर सभी तो नहीं कहेंगे– त्वमेव माताश्च पिता च बंधु च सखा फलाना–फलाना। नहीं, प्रिंसीपल बाप कहते हैं– बापदादा या मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट। (बच्चों ने कहा– गुडनाइट) न चाहते हुए भी अरे जाना पड़ता है सर्विस पर।